7 'गहराता जल संकट' विषय पर एक आलेख लिखिए।

उत्तर

गहराता जल संकट

जल मानव की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है। हमें अपनी प्यास बुझाने, स्नान करने, घर आदि की सफ़ाई करने, फ़सलों की सिंचाई करने आदि में जल की आवश्यकता पड़ती है, परंतु सच तो यह है कि धरातल का 70% से अधिक हिस्सा जल से भरे होने पर भी कुल जल का मात्र 0.6 भाग ही मृदु जल अर्थात् पीने योग्य है। वर्तमान समय में मानवीय गतिविधियों के कारण मीठी जलराशि का बड़ा भाग प्रदूषित हो चुका है, फलस्वरूप पेय जल की समस्या उत्पन्न हो गई है। यदि जल को प्रदूषित करने का क्रम यूँ ही जारी रहा तो वह दिन दूर नहीं कि जब अगला विश्वयुद्ध पानी के लिए लड़ा जाएगा। वैज्ञानिकों के अनुमान के अनुसार, वर्ष 2025 तक विकट जल संकट से जूझती विश्व की दो-तिहाई आबादी अन्य देशों में रहने के लिए बाध्य हो जाएगी।

आज विश्व के 30% देश जल संकट का सामना कर रहे हैं। हमारे देश भारत में भी मात्र 42% लोग ही पेयजल के रूप में स्वच्छ जल प्राप्त कर पाते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार, भारत सर्वाधिक प्रदूषित पेयजल आपूर्ति वाला देश है।

नदियों के जल के प्रदूषण को नियंत्रित करने हेतु नदियों के किनारे स्थापित उद्योगों के अपशिष्ट पदार्थों को नदियों में प्रवाहित करने से रोकना होगा। इसके साथ-ही-साथ जल-संचय एवं जल-प्रबंधन जैसी योजनाओं को प्रभावी तौर पर अपनाए जाने की भी आवश्यकता है। नए जलाशयों का निर्माण कर व उन्हें पक्का कर जल संचय का लाभ लिया जा सकता है। जल-संरक्षण हेतु खेतों में सिंचाई के नालों का पक्कीकरण होना चाहिए। प्रत्येक घर-परिवार में जल के अनावश्यक खर्च में कमी लाकर भी जल संकट की समस्या को कुछ हद तक कम किया जा सकता है। वर्तमान समय में जल प्रदूषण एवं अन्य कारणों से उत्पन्न जल संकट हेतु मानव ही उत्तरदायी है। अतः अपने अस्तित्व ही नहीं बल्कि पृथ्वी और अपनी आने वाली पीढ़ियों की रक्षा हेतु भी हमें जल संकट का समाधान शीघ्र ढूँढ लेना चाहिए।

class 11th c
sub hindi
date 14/4/20
learn and write in fair notebook